साहित्यिक जीवनालेख

कृतित्व से झांकते व्यक्तित्व

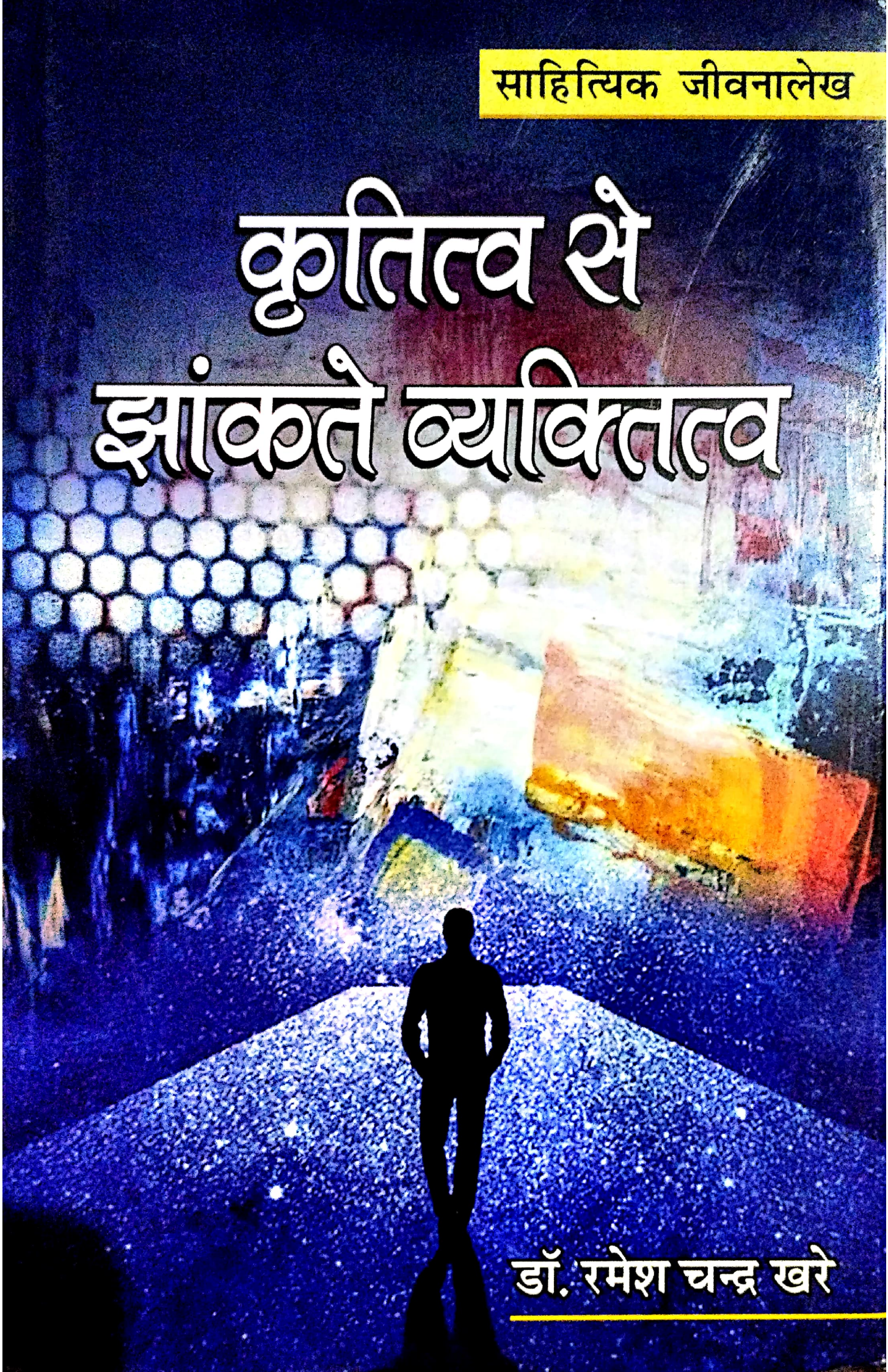

डॉ. रमेश चन्द्र खरे

कृतित्व ही व्यक्तित्व की सही पहचान होती है। वह कृतित्व चाहे साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा, तकनीक, व्यवसाय, राजनीति किसी भी क्षेत्र का हो, उसका प्रस्तुतिकार निश्चित ही उसकी प्रतिच्छाया होता है। वह ईश्वरीय वरदान प्रतिभा उसकी साधना से मंजकर उसे गौरवान्वित करती है। यह अलग बात है कि कुछ स्वांत:सुखाय प्रकाशन-निरपेक्ष अंतर्मुखी प्रतिभाएं अंधेरे में ही गुम हो जाती हैं। पर जो प्रकाशित हो, संपर्क में आती हैं, उनकी उपलब्धि, साहित्यिक अवदान, सामाजिक उपादेयता, आदि जब प्रभावित करती है, तब सहज ही उन पर आदरांजलि व्यक्त होती है।

मेरे अपने संपर्क और अध्ययन के दौरान जो विशिष्ट प्रतिभाओं से प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंधों का सुअवसर प्राप्त हुआ, मैंने जैसा उन्हें जाना माना और जिनने मुझे प्रभावित किया, उनका कृतित्व ही मेरे सामने उनका साकार व्यक्तित्व बनकर आ खड़ा हुआ। ये आलेख समीक्षा नहीं हैं, सम-वीक्षा मानें। शायद वे किसी और अध्ययनकर्ता को यत्किंचित प्रेरणा-सहायक हो सकें। इस उद्देश्य से कुछ चयनित विभूतियों की प्रभावी कृतियों के कुछ शब्द चित्र जो कुछ आकाशवाणी से प्रसारित, कुछ पत्रिकाओं और अमृत-स्मारिकाओं में प्रकाशित और कुछ व्यक्तिगत संपर्क पर आधारित हैं, यहां प्रस्तुत हैं। हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा में युगानुरूप जिनने जैसा विचारात्मक और भावात्मक योगदान, साहित्यिक पत्रकारिता में मानवीय हस्तक्षेप, तथा आध्यात्मिकता और राष्ट्रीयता में अनुभूत अभिव्यक्ति प्रस्तुत की, वे प्रणम्य पदचिन्ह अंकित हैं। कुछ क्षेत्रीय आंचलिकता की बुलंद ध्वनियों की भी यहां गूंज है। उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पुन: यह शब्दांजलि समर्पित है।

कृतित्व से झाँकते व्यक्तित्व

(साहित्यिक जीवनालेख)

कृतित्व से झाँकते व्यक्तित्व

डॉ. रमेश चन्द्र खरे

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-93-89999-37-4

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 9211312372
e-mail : ayanprakashan@gmail.com
website : www.ayanprakashan.com

•

मूल्य : 320.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2020 © डॉ. रमेश चन्द्र खरे

KRITITV SE JHANKTE VYAKTITV
by Ramesh Chandra Khare

मुद्रक : एस.पी. कौशिक एंटरप्राइजेज, शाहदरा, दिल्ली-110095

आदरांजलि

डॉ. रमेश चंद्र खरे का प्रस्तुत जीवनीपरक निबंध-संग्रह उनके उन निबंधों का प्रस्तुतीकरण है जिनसे लेखक की ऊर्जा को दिशांकित किया। ये निबंध सुगठित भी हैं और इतिवृत्त परक भी। इनमें वैचारिक चैतन्यता भी है और भावान्विति भी। काव्यात्मकता भी है और व्यंग्यनिष्ठ तेवर भी। भाषा की सजावट भी है और अकृत्रिम संवाह भी।

इस पुस्तक में 30 साहित्यकारों- कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित निबंधों का संकलन है जो विभिन्न अवसरों और सामयिक प्रसंगों पर लिखे गए हैं। कुछ लेख आकाशवाणी हेतु शब्दबद्ध किए गए और कुछ विविध प्रसंगों पर। वैसे तो ये साहित्यकारों की धन्य जीवनियां हैं, पर साहित्यिक अवदानों से ओतप्रोत। चूंकि साहित्यकार समाज सुधारक, राजधर्म का दिशा दर्शक और नीति निर्धारक आचार देता है, इसलिए उसका व्यक्तित्व सर्वतोमुखी और कृतित्व लोकसंजीवक होता है।

इस कृति में श्रृंगार काल के रीति कवियों से लेकर द्विवेदी कालीन, छायावादी, आध्यात्मिक, प्रगतिवादी, और वर्तमान प्रयोगधर्मी, रचनाकारों के संक्षिप्त जीवनवृत्त एवं साहित्यिक योगदान का स्वरूप और विवेचन विश्लेषण किया गया है। इनमें निबंधकार, कवि, नाटककार, उपन्यासकार, व्यंग्यशिल्पी, समीक्षक, संपादक आदि सभी वर्ग और सरणियों के सुजीवन चरित्र विद्यमान हैं।

वस्तुतः डॉ. रमेश चंद्र खरे के व्यक्तित्व एवं कृत्तिव में जो रचनाकार समा गए या समकाल में उपस्थित हुए उन सभी को लेखक ने जीवनहार पहनाया है। श्रेष्ठ रचनाकर वही होता है जो पूर्ववर्तियों को समादरित करता है और समवर्तियों को स्नेहाभिनंदित।

अनुक्रमणिका

01.	रीतिरात्मा काव्यस्थ-महाकवि भूषण	11
02.	बुन्देली गौरव पद्माकर का भाषिक कौशल	16
03.	बुंदेली 'महाकवि ईसुरी' का महाकाव्यत्व	18
04.	हिंदी के महा-वीर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	23
05.	आदर्श आचार्य रामचंद्र शुक्ल का शुक्ल पक्ष	27
06.	भारतीय संस्कृति का प्रकाश स्तंभ: 'प्रसाद की' कामायनी का नारीत्व	32
07.	राष्ट्रीयधारा के प्रखर कवि 'नवीन'	44
08.	भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों का नायकत्व	49
09.	डॉ. राम कुमार वर्मा के नाटकों की अभिनेयता	54
10.	हजारी प्रसाद आचार्य द्विवेदी का शैली वैशिष्ट्य	58
11.	बुंदेलखण्ड का बुलंद व्यक्तित्व : 'दिव्य' जी	62
12.	अज्ञेय की काव्य भाषा	67
13.	अमृतलाल नागर जी की सामाजिक चेतना	72
14.	साई-भक्ति साहित्य के सारस्वत सर्जक 'नियाज़'	76
15.	व्यावहारिक संवेदन की विस्मृत : आशा रानी व्होरा	81
16.	अप्रतिम प्रेरणा-पुरुष : ओशो	85
17.	दमोह के दमकते दिनकर	90
18.	साहित्य-संगठन संवेदी : बटुक चतुर्वेदी	99
19.	डॉ. एल.एन. दुबे का प्रणामी साहित्य को अवदान	102
20.	वे सबके, सब उनके - दादा कैलाश चंद्र पंत	109
21.	पाँचवे पुरुषार्थी : डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'	113

22. एक और साहित्यिक गांगोत्री: डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 120
23. चर्चित 'चंदन चरित्र': डॉ. राज कुमार तिवारी 'सुमित्र' 124
24. एकांत साधक साहित्यधर्मा : डॉ. सुरेश कुमार वर्मा 128
25. सदैव अपने से असंतुष्ट समीक्षक प्रवर:
डॉ. संतोष कुमार तिवारी 131
26. सटीक अभिव्यक्ति के साहसिक प्रवक्ता:
आचार्य भगवत दुबे 136
27. असंतोष की उर्वर भूमि में, 'संतोष' (खरे) का
सघन व्यंग्य वृक्ष 144
28. साहित्य का सौंदर्य : डॉ. श्याम सुंदर दुबे 150
29. एक अविस्मरणीय साहित्य साधक: कमल कांत 153
30. उमा-तपस्या और शंकर-विषपान के मिश्रित मानक:
उमा शंकर मिश्र 156

1. रीतिरात्मा काव्यस्थ महाकवि भूषण
(सं. 1700 से सं. 1785)

हर युग जहां उसकी रचना को प्रभावित करता है, वहीं उससे प्रभावित भी होता है। हिंदी साहित्य का रीति काल सामान्यतः सं. 177 से 1900 के बीच का रचनाकाल माना जाता है, जो एक विशेष उद्देश्य और प्रवृत्ति के वशीभूत होकर रचा गया है, जिसके अंतर्गत अलंकार, ध्वनि, रस, नायिका भेद, गुण आदि आते हैं। वैसे रीति काव्य का प्रारंभ संस्कृत साहित्य में, रीति सिद्धांत के रूप में नवीं शताब्दि के आरंभ में आचार्य वामन द्वारा 'रीतिरात्मा काव्यस्थ' कहकर काव्य को आत्मा के रूप में हुआ। तदनुसार 'रीति' एक गुण विशिष्ट पद रचना अर्थात शैली है। स्थान भेद से ये रीतियां वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली मान्य हुईं, जिनमें न्यूनाधिक ओज, प्रसाद, माधुर्य गुण वर्गीकृत हुए।

हिंदी रीति काव्य को कुछ नीतिवादी आलोचकों ने गहन अध्ययन के अभाव में उसकी कथित अश्लीलता को लेकर 'कुरीति काव्य' तक कहा है, जबकि अश्लीलता जहां एक ओर देश काल और दृष्टि सापेक्ष्य अवधारणा है वहीं उस काल में भक्ति नीति और वीर रस की भी पर्याप्त रचनाएं हुई हैं। उदार दृष्टिकोण से जब डॉ. श्याम सुंदर दुबे 'बिहारी सतसई' का सांस्कृतिक अध्ययन' कर सकते हैं, तब पूरे रीति काल का भी ऐसा मूल्यांकन अपेक्षित है। वीरगाथा काल का चारण युग राजकृपा से अतिशयोक्तिपूर्ण घोर ऐहिकतावादी था जो काव्य प्रतिभा को प्रर्याप्त अवकाश नहीं देता था। पर रीति काल में जो लाल, गंग, सूदन, भूषण आदि कवियों द्वारा वीर काव्य रचा गया, वह काव्य यात्रा भी एक युग की सांस्कृतिक यात्रा है, ऐतिहासिक यात्रा है, राजनैतिक यात्रा है, सामाजिक यात्रा है। परिणाम स्वरूप ओजस्वी रचनाएं हमें प्राप्त हुईं।

हिंदी रीति काव्य की प्रेरणा मुख्यतः अकबर के दरबारी कवियों और केशव दास से प्राप्त मानी जाती है। सेनापति, बिहारी, चिंतामणि, मतिराम, देव,

डॉ. रमेश चन्द्र खरे

आत्मज : स्व. विष्णु स्वरूप खरे,
स्व. श्रीमती श्यामा बाई खरे

जन्म : 19 जुलाई, सन् 1937, होशंगाबाद (म.प्र.)

शिक्षा : मैट्रिक तक, म्यु. हाई स्कूल, गाडरवारा,
डिप.टी.- प्रा. शि. महा वि. जबलपुर

स्वाध्यायी : साहित्य रत्न, एम.ए. (इतिहास, हिंदी)
पीएच.डी. (सागर वि.वि. सागर)

प्रकाशित कृतियां : काव्य-6 (विरागी अनुरागी, संवेदनाओं के सोपान, संभाव आयाम, व्यंग्यायन, बहरायुग, गीता योगायन)

बाल साहित्य : 6 आओ गाएं शाला में पढ़ते पढ़ते, आओ सीखें मैदानों में गाते गाते, आओ खेलें रंगमंच पर मंथन करते, आओ बांटें यादें बचपन की हँसते हँसते, प्रकृति से पहचान, कहानियां बुद्ध और विवेक की

श्रेष्ठ व्यंग्य : 4- अधबीच में लटके, शेष कुशल है, मेरे भरोसे मत रहना, सूत्रों के हवाले से

निबंध-संग्रह : 2- भावानुभूति, भावानुकृति

समीक्षाएं : प्रकर, भाषा, अक्षरा, साक्षात्कार, प्रसंगम, व्यंग्य यात्रा, हास्यम्-व्यंग्यम् आदि में। 'किताबों में से निकली किताब'।

संपादन : 'नवोदित', 'गरिमा, अनुगमन, लेखनी, बुंदेली अर्चन, कीर्तिमान, योगानुभूति, स्वरित, भाषा श्रृंगार।

प्रसारण : 60-आकाशवाणी, छतरपुर और दूर दर्शन भोपाल से। पुरस्कार - अखिल भारतीय, 17 (राष्ट्रीय पुरस्कार - शिक्षा, भारती भूषण, साहित्य शिरोमणि, भाषा भूषण, काव्य कल्पतरु, शाश्वतामृत, राष्ट्र भाषा गौरव, कबीर सम्मान, विद्यावाचस्पति आदि।

प्रांतीय सम्मान : 11-म.प्र. (साहित्य अकादमी का बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', व शरद जोशी व्यंग्य पुरस्कार तथा 'अक्षर आदित्य' तथा 'स्व. ज. प्र. तिवारी स्मृति सम्मान'।

सम्मान : रजत अलंकरण तथा म.प्र. लेखक संघ का 'सारस्वत सम्मान, 'अक्षर आदित्य कादंबरी' जबलपुर।

स्थानीय : 4- (एस.पी.लाल अवार्ड, राजेन्द्र सम्मान, चित्रांश गौरव, ब.ल.गुरु अलंकरण)

संस्थागत सेवा : नवोदित, राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, म.प्र. लेखक संघ, पाठकमंच,म.प्र. (साहित्य एकेडमी), 'भाषा श्रृंगार' - सहसंपादक।

संप्रति : से.नि. प्र. प्राचार्य शा. उ. उच्चतर मा. शाला

संपर्क : 'श्यामायन' एम.आई.जी.बी. 73, विवेकानंद नगर, दमोह-470661 (म.प.)

मोबा. नं. : 9893340604

अयन प्रकाशन
साहित्य संस्कार के 40 वर्ष

ISBN 978-93-89999-17-4